कार्यक्रम विवरण

प्रथम दिवस, 20 अगस्त, 2019

स्थान:कस्तूरबा सभागार, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद्या भवन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जलपान एवं पंजीकरण : 9:00
उद् घाटन सत्र : प्रात: 10:00-12:00
चाय अंतराल : 12:00-12:15
प्रथम अकादमिक सत्र: 12:15- 1:30
भोजन अवकाश : 1:30- 2:30
(भोजनावकाश के बाद के समस्त सत्र 'गालिब सभागार', साहित्य विद्यापीठ, तुलसी भवन में संपन्न होंगे)
द्वितीय अकादमिक सत्र : 2:30 - 4:00
चाय अंतराल : 4:00 - 4:15
तृतीय अकादमिक सत्र : 4:15 - 5:45
अल्पाहार एवं चाय अंतराल : 6:00
सांस्कृतिक संध्या : 6:30
रात्रि भोजन : 8:30

द्वितीय दिवस, 21 अगस्त, 2019

स्थान: बापू कुटी, सेवाग्राम
आश्रम हेतु प्रस्थान : 8:00
जलपान : 8:30-9:00
वृत्त चित्र : 9:15-9:45
चतुर्थ अकादमिक सत्र : 10:00-11:30
चाय अंतराल : 11:30
पंचम अकादमिक सत्र : 12:00-1:30
भोजन अवकाश : 1:30-2:15
षष्ठ अकादमिक सत्र : 2:30- 4:00
चाय अंतराल : 4:00-4:30
आश्रम दर्शन / भ्रमण : 4:30-6:00
प्रार्थना सभा : 6:00 सायं
वृत्त चित्र : 6:30-7:30
रात्रि भोजन : 7:30-8:00

तृतीय दिवस, 22 अगस्त, 2019

स्थान: गालिब सभागार, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
जलपान : 8:30-9:00
सप्तम अकादमिक सत्र : 9:15-10:15
चाय अंतराल : 10:15-10:30
अष्टम अकादमिक सत्र : 10:30-11:45
चाय अंतराल : 11:45-12:00
नवम अकादमिक सत्र : 12:00-01:15
भोजन अवकाश : 1:15-2:00
परिचर्चा एवं समापन सत्र : 2:00-4:00 बजे

***

संरक्षक

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. अरविंद प्र. जामखेड़कर
अध्यक्ष, भा.इ.अ.प., नई दिल्ली

आयोजन समिति

अध्यक्ष

प्रो. कुमार रतनम्
सदस्य सचिव, भा.इ.अ.प., नई दिल्ली

सह-अध्यक्ष

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह
कुलसचिव, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

सचिव

डॉ. ओम जी उपाध्याय, निदेशक (शोध एवं प्र.)
डॉ. राजेश कुमार, निदेशक (प., प्र. एवं पु.)

परामर्शदातृ समिति

प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, अधिष्ठाता, भाषा विद्यापीठ
प्रो. प्रीति सागर, साहित्य विद्यापीठ
प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, संस्कृति विद्यापीठ
प्रो. फरहद मलिक, मा. एवं सा. विज्ञान विद्यापीठ
प्रो. मनोज कुमार, विधि विद्यापीठ
श्रीमती मालविका गुलाटी भा.इ.अ.प., नई दिल्ली
डॉ. सुरेश कुमार, भा.इ.अ.प., नई दिल्ली

अकादमिक सलाहकार

डॉ. मनोज कुमार राय, वर्धा
(9404822608)

समन्वयक

डॉ. विनोद कुमार,
सहायक निदेशक, शोध, भा.इ.अ.प., नई दिल्ली
(9871228388)
डॉ. प्रवीण कुमार शर्मा

कार्यक्रम स्थल

गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ, तुलसी भवन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
एवं
बापू कुटी, सेवाग्राम

ज्ञान शांति मैत्री

राष्ट्रीय परिसंवाद

गांधी और उनकी समसामयिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज

20-22 अगस्त, 2019

आयोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

राष्ट्रीय परिसंवाद

गांधी और उनकी समसामयिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज

किसी भी महान विचारक और अतीत में एक प्रभावी राजनीतिक शक्ति के रूप में सक्रिय रहे ऐतिहासिक पात्र की प्रासंगिकता को समकालीन समाज अपनी दृष्टि से व्याख्यायित करता है। समकालीन समाज और राजनीति में उसे अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करनी होती है। हर विचारक की मान्यताएं और धारणाएं उसके देश और काल में विद्यमान राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और बौद्धिक प्रश्नों के आलोक में निर्मित होती हैं। इस इतिहास को वर्तमान में अध्ययन करने का महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि वर्तमान के प्रश्नों और उसकी चुनौतियों को लेकर विचारक के पास अतीत में लौटा जा सके। अगर वह विचारक हमारे समागत प्रश्नों का उत्तर न दे पाएं तो उसकी वैचारिकी में लोग रूचि लेना कम करने लगते हैं।

क्या हम महात्मा गांधी को भी इस मानदंड पर खरा उतरने के लिए बाध्य करें? यह एक तथ्य है कि भारत का विचार गांधी के बिना पूर्ण नहीं, लेकिन वर्तमान में स्मरणीय उत्सवों को मनाने की राजनीतिक और आर्थिक गतिकी कुछ ऐसी है कि गांधी की प्रासंगिकता पर भी सवाल खड़े किये जा रहे हैं। क्या गांधी वर्तमान में प्रासंगिक हैं? जब हमारा बौद्धिक विमर्श ऐसे प्रश्न उठाने को तैयार है तो फिर प्रासंगिकता का परीक्षण करने के लिए उसे 1947-48 की सीमा रेखा को पार करके भारत के समकालीन इतिहास में प्रवेश करना होगा। गांधी के कई योगदान और कार्य-नीतियाँ, जैसे, स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रियता, सत्याग्रह, रचनात्मक कार्यक्रम, सर्वोदय, नारी संबंधित दृष्टिकोण, इतिहास-दृष्टि,समकालीन महापुरुषों से संबंध आदि को उनके जीवन काल में देखने के अलावा उनके परवर्ती जीवन में भी विश्लेषित करना होगा।

क्या आज के समाज में सर्वोदय और सत्याग्रह प्रासंगिक हैं? क्या समकालीन नारी आंदोलन गांधी की दृष्टि से प्रभावित हो रहा है? क्या स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जिस राष्ट्र और समाज के निर्माण को ध्येय बनाकर सक्रिय थे, आज वह साकार है? भारत और भारतीयता के जिस स्वरूप की गांधी निर्मिति कर रहे थे,क्या वह आज के परिवेश में प्रासंगिक है? अगर गांधी की प्रासंगिकता पर कोई विमर्श हो, तो उस विमर्श को ऐसे कई प्रश्नों का उत्तर वर्तमान परिस्थितियों के आलोक में देना होगा।

गांधी का जीवन और उनकी मृत्यु के बाद का उनका जीवन अपनी समकालीनता में महत्त्वपूर्ण है और इसीलिए उस पर चर्चा होती रहेगी। अगर वे मात्र अतीत और इतिहास के कार्यक्षेत्र तक सीमित रहते तो वर्तमान हर बार उन तक लौट कर अपनी चुनौतियों के समाधान तलाशने को प्रयासरत नहीं होता। फलतः गांधी का जीवन और उनके विचार इतिहास के दो सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व-परिवर्तन और निरंतरता के मध्य विश्लेषित होने चाहिए। उनकी 150वीं जयंती का उत्सव मनाते हुए यह अकादमिक विमर्श जितना ही गांधी के जीवन और वैचारिकी को केंद्र में लायेगा उतना ही उनके परवर्ती जीवन पर भी गवेषणात्मक चिंतन करेगा।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की स्थापना 27 मार्च, 1972 को तत्कालीन शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के अंतर्गत की गयी। परिषद का मुख्य उद्देश्य इतिहास के क्षेत्र में वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक इतिहास लेखन को प्रोत्साहित करना है। अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु परिषद द्वारा राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति, गुरुकुल अध्येतावृत्ति, वरिष्ठ अकादमिक अध्येतावृत्ति, कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति के अतिरिक्त राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, शोध परियोजनाओं, अध्ययन सहयात्रा अनुदान, विदेश यात्रा अनुदान तथा प्रकाशन अनुदान प्रदान किए जाते हैं। परिषद का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। पुणे, गुवाहाटी तथा बंगलुरु में क्षेत्रीय कार्यालय कार्यरत है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

महात्मा गांधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। उन्होंने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना कोई भी राष्ट्र गूँगा हो जाता है। नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी,1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में- जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना राष्ट्रपिता की कर्मभूमि वर्धा में की गयी। यहाँ हिंदी को तकनीकी जानकारी और विविध व्यवसायों की संवाहक भाषा के रूप में विकसित करने पर बल दिया जा रहा है। इस विश्वविद्यालय की मंशा है कि हिंदी माध्यम से ज्ञान के विभिन्न अनुशासन एवं परिक्षेत्र न केवल भारत में अपितु विश्व जनमानस में अपनी गहरी पैठ बनायें और हिंदी विश्व-हृदय का हार बने। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबल हिंदी' की राह पर यह एक बड़ा मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी जी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबद्ध है।

वर्धा कैसे पहुँचे –

विश्वविद्यालय शहर के शोरगुल वाले माहौल से थोड़ी दूरी पर स्थित है। वर्धा भारत के सभी प्रमुख शहरों से सड़क, रेल एवं हवाई यात्रा (वाया-नागपुर) से जुड़ा हुआ है। जिससे अप्रवासी भारतीय/विदेशी विद्यार्थी मुम्बई,नई दिल्ली एवं चेन्नई के जरिए आसानी से वर्धा पहुँच सकते हैं। नागपुर से 70 किलोमीटर दूरी पर बसे वर्धा तक बस/कार द्वारा लगभग एक घंटे में पहुँचा जा सकता है। विश्वविद्यालय परिसर वर्धा रेलवे स्टेशन से 6 किलोमीटर एवं सेवाग्राम रेलवे स्टेशन से 9 किलोमीटर की दूरी पर है। नागपुर से वर्धा के लिए नियमित अंतराल पर बस सेवा उपलब्ध है जिससे विश्वविद्यालय परिसर में पहुँच आसान है।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सहयोग से दिनांक 20-22 अगस्त, 2019 को महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में *'गांधी और उनकी समसामयिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज'* विषय पर एक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन कर रहा है।

परिसंवाद के उपविषय –

1. गांधी : मोहन से महात्मा
2. गांधी की सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि
3. गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम : खादी, अस्पृश्यता निवारण और हिन्दू-मुस्लिम एकता
4. किसानों और मजदूरों के प्रति गांधी का दृष्टिकोण
5. गांधी और आर्थिक विकास की संकल्पना
6. समकालीन भारत में साम्प्रदायिकता और सेकुलरवाद के विमर्श पर गांधी की संभावित दृष्टि
7. संवैधानिक संस्थाओं के कार्यक्षेत्र और कार्यशैली की गांधी वादी आलोचना
8. भारतीय संसदीय राजनीति और समकालीन राजनीतिक संस्कृति पर गांधी का प्रभाव
9. हिंसा और गांधीवादी हस्तक्षेप
10. समकालीन भारत में पत्रकारिता और गांधी की पत्रकारिता विरासत
11. गांधी : समकालीनों की दृष्टि में
12. गांधी और समकालीन भारत में भाषिक एकता और देशज साहित्य के प्रश्न
13. गांधी के परवर्ती जीवन का समाज में विस्तार
14. गांधी और नारीवादी विमर्श
15. कला और सौंदर्य की गांधी दृष्टि
16. गांधी और समकालीन भारत में प्रतिरोध की संस्कृति
17. गांधी और भारतीय बौद्धिक वर्ग
18. गांधी और अंतरराष्ट्रीयतावाद
19. गांधी और राष्ट्रवाद
20. सभ्यता-विमर्श और गांधी

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत
वेबसाइट : www.hindivishwa.org